Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on “_वियना कांग्रेस के उद्देश्य एवं कार्यों की समीक्षा करें।"(Notes -3)

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

वियना कांग्रेस के उद्देश्य एवं कार्यों की समीक्षा करें।

वियना कांग्रेस के निर्णय एवं प्रादेशिक व्यवस्था-

इसने जो प्रादेशिक व्यवस्था की उसके निम्नलिखित उद्देश्य थे। जिन देशों ने नेपोलियन को हराने में हिस्सा लिया था उन्हें पुरस्कार और जो पराजित हुए थे उन्हें दंड मिलना चाहिए। यूरोप में क्रांति से पहले की व्यवस्था लागु किया जाए। जिससे यूरोपीय व्यवस्था का निर्माण हो और शांति तथा सुरक्षा कायम रखा जा सके। नेपोलयन ने जिन राज्यों को फ्रांस में शामिल किया था उन्हें छीन लिया गया। और फ्रांस में प्राचीन राजवंश को फिर से स्थापित किया गया। इंगलैंड को औपनिवेशिक और व्यापारिक लाभ हुए। माल्टा, सेंट, लुसियना, मॉरिशस के द्वीप फ्रांस से लेकर इंगलैंड को दे दिया गया। प्रशा को भी लाभ हुआ उसे उत्तरी सैक्सनी, सलासापेल एवं त्रीले के प्रदेश दिए गए फलत: उसका राज्य दुगुन्ना बढ़ गया और दक्षिणी जर्मनी में उसका प्रभाव कायम हो गया। बेल्जियम को

हौलेंड में शामिल किया गया और वहाँ फिर से अंग्रेज राजवंश की स्थापना की गई। आस्ट्रिया को इटली के बेलेशिया तता लोम्ब्रार्डी के प्रदेश दिए गए। इस प्रकार मध्य यूरोप में उसका प्रभाव कायम हो गया और मेटर्नक अपने उद्देश्य में सफल रहा। रुस को वारसा तथा वेसरेविग मिला। फलत: पश्चिमी यूरोप में उसका काफी विस्तार हुआ। इटली को छोटे- छोटे राज्यों में बाँटकर उसे वहाँ के प्राचीन शासकों को दे दिया गया और इटली में आस्ट्रिया का प्रभाव स्थापित किया गया। पोलैंड का अस्तित्व समाप्त हो गया। रुस, प्रशा और आस्ट्रिया ने उसे आपस में बाँट लिया। स्पेन में पुन: प्राचीन राजवंश की स्थापना की गई। यद्धपि पुर्तेगाल ने अंग्रेजों की सहायता की थी लेकिन इसे कुछ नहीं दिया गया। स्वीडन और डेनमार्क को दंड मिला। स्टीजरलैंड पहले से अधिक शक्तिशाली हो गया। उसे 22 राज्यों का शक्तिशाली संघ बनाया गया। जर्मनी के संबंध में कांग्रेस के निर्णय काफी महत्वपूर्ण थे। जर्मनी के बचे हुए 38 राज्यों को मिलाकर एक संघ बनाया गया। जिसका प्रधान आस्ट्रिया का सम्राट फ्रांसिसको प्रथम था। इसके अतिरिक्त कांग्रेस ने और भी अनेक कार्य किये उसने दास- प्रथा को अनैतिक बनाया। अंतराष्ट्रीय विधियों

के संबंध में भी निर्णय लिए गए। भविष्य में यूरोपीय शांति को कायम रखने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की गई जिसे यूरोपीय व्यवस्था कहा जाता है।

वियना कांग्रेस के कार्यों का मुल्यांकन-

वियना कांग्रेस का आरंभ उच्च आदर्शों एवं उद्देश्यों की घोषणा के साथ हुआ था। लेकिन उसका उद्देश्य पूरा नहीं हो सका था। उसका कार्य करने का ढंग दोषपूर्ण था। सभी राष्ट्र अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे थे। अत: समस्याओं के समाधान में यह असफल रहा। वियना सम्मेलन का कार्यक्रम स्वार्थ परता पर आधारित था। इसके सदस्यों ने नैतिक सिद्धांतों को अपेक्षा की। इस लिए इसके निर्णय अस्थायी अनिर्थक साबित हुए। इसने यूरोप के नव निर्माण में कोई ऐसा प्रयास नहीं किया जिससे जनता की इच्छा की पूर्ति हो सके और स्थायी तौर पर व्यवस्था कायम हो सके। इसने सिर्फ शक्तिसंतुलन के सिद्धांत के आधार पर राष्ट्रीय सीमा का निर्धारण किया किया लेकिन लोकप्रिय भावना को कोई महत्व नदीं दिया। इसपर दुसरा आरोप यह लगाया जाता है कि इसने कुछ कार्यों को अधुरा छोड़

दिया और कुछ समस्याओं पर इसने ध्यान नहीं दिया जैसे- यूरोपीय शांति को सुरक्षित रखने के एक लिए एक संधि पत्र पर हस्ताक्षर करना था लेकिन ऐसा नहीं हो सका। कुछ इतिहासकारों ने वियना कांग्रेस को प्रतिक्रयावादी कहा है। इसके लिए राष्ट्रीय भावना की कोई कीमत नहीं थी इसपर यह भी आरोप है कि बड़े राष्ट्रों के हितों क रक्षा के लिए छोटे राष्ट्रों के हितों की उपेक्षा की गई। उपर्युक्त आरोपों के बावजुद यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वियना में राजनीतिक संयम और दूरदर्शता से काम लिया गया था। जर्मनी और इटली के एकीकरण की दिशा में इसने महत्वपुर्ण काम किया। इतना ही नहीं इसमें दास प्रथा वयापारिक स्वतंत्रता आदि पर भी विचार किया गया। राज्यों की अराजकता को नष्ट करने की दिशा में इसने महत्वपूर्ण काम किया। इसने अंतराष्ट्रीय संविधान का भी निर्माण किया। इसके कार्यों के फलस्वरुप यूरोप में 40 वर्षों तक शांति बनी रही। पहली बार अंतरराष्ट्रीय विषयों पर बात- चीत करने के लिए बैठक बुलाई गई थी। और इसने यूरोपीय व्यवस्था का संगठन किया था इसे हम प्रथम अंतर्राष्ट्रीय संगटन कह सकते है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

References: Internet & Competitive books.